International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

महिलाओं के आर्थिक विकास में स्वयं सहायता समूह की भूमिका

Dr. Ramesh Chand Meena

Assistant Professor, Department of EAFM, BBD Govt. College, Chimanpura, Shahpura, Jaipur, Rajasthan, India

सार: क्या आपको नहीं लगता कि महिलाओं की स्थिति शुरू से ही विरोधाभासी रही है? एक तरफ महिला उपलब्धियों की सीढ़ियाँ चढ़ रही है, लेकिन दूसरी तरफ उसे न केवल समाज बल्कि अपने परिवार से भी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि महिलाओं ने इस आधुनिक समय में बहुत कुछ हासिल किया है, लेकिन हम इस तथ्य से भी अवगत हैं कि सफलता की इस सीढ़ी पर उन्हें अभी भी लंबा सफर तय करना है। जीवन के इस रणक्षेत्र में, महिलाएँ अपनी प्रतिभा और क्षमताओं के साथ सभी बाधाओं को पार कर रही हैं। भारत में महिलाओं की एक सभ्य और आशाजनक स्थिति का विचार धीरे-धीरे विकसित हो रहा है। लेकिन अभी भी कई अन्य ऐसे भी हैं, जो इन बाधाओं को भी पार नहीं कर पाए हैं। यहीं से महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक विकास में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका अस्तित्व में आती है।

I. परिचय

भारत में स्वयं सहायता समूह

स्वयं सहायता समूह समाज के जरूरतमंद और हाशिए पर पड़े वर्गों के लिए बदलाव के वाहक हैं, जिनका गठन भारत में लोगों की जीवन स्थितियों को बेहतर बनाने में आपसी रुचि रखने वाले व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। एक समान सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के साथ, ये संगठन समाज के कमजोर वर्गों की सेवा करने की क्षमता को बढ़ाने पर काम करते हैं, जिससे देश में सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है। इसके अलावा, कमजोर वर्ग इन समूहों से बाजार संचालित दरों पर बिना किसी जमानत के ऋण भी ले सकते हैं। इस प्रकार, जरूरतमंद लोगों को माइक्रोफाइनेंस सेवाएं प्रदान की जाती हैं।

महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक विकास में स्वयं सहायता समूहों का प्रभाव और भूमिका

आज के समय में सशक्तिकरण ही वह मंत्र है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने जीवन में कुछ भी हासिल कर सकता है। सशक्त होने मात्र से ही व्यक्ति अपनी स्थिति और जीवन स्थितियों को बदल सकता है। इसलिए यदि समाज में लोगों को सशक्त बनाया जाए तो संतुलन मजबूत होता है। स्वयं सहायता समूह समाज में कमजोर वर्गों को अपना स्थान ऊपर उठाने और राष्ट्र के सशक्त नागरिक बनने में मदद करते हैं। तो, यहाँ भारत में महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक विकास में स्वयं सहायता समूहों के प्रभाव और भूमिका के बारे में बताया गया है।[1,2,3]

बैंकों और स्वयं सहायता समूहों का संपर्क

बैंक स्वयं सहायता समूह को बढ़ावा देने वाली संस्था (एसएचपीआई) के किसी भी सक्रिय हस्तक्षेप के बिना स्वयं सहायता समूहों को धन मुहैया कराते हैं। स्वयं सहायता समूह समाज में महिलाओं के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए बैंकों और वित्तीय वार्ताकारों की सहायता लेते हैं। इस प्रकार, वे देश के सामाजिक-आर्थिक विकास के और करीब पहुँच जाते हैं।

गरीब परिवारों की महिलाओं को सूक्ष्म वित्त पोषण का लाभ

स्वयं सहायता समूहों का उद्देश्य समाज के ग्रामीण परिवारों की लाभप्रदता को बढ़ावा देना है। ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक कारकों में पिछड़ापन देश के पिछड़ेपन के पीछे मुख्य कारणों में से एक है, जिसमें कमजोर पूंजी आधार, कम उत्पादकता, कम आय और बचत और गरीबी के दुष्चक्र में फंसे लोग शामिल हैं। भारत में महिलाओं को माइक्रो-फाइनेंस के रूप में सस्ता ऋण प्रदान किया जाता है ताकि वे खुद को कुछ उत्पादक कार्यों में शामिल कर सकें। महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को ऊपर उठाने में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका ने इन समूहों को मान्यता प्रदान की है।

महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण

भारत में महिलाओं को समाज और उनके परिवार दोनों में प्रशंसा और स्थिति का अपना हिस्सा मिलना चाहिए। यह समाज में उपलब्ध संसाधनों में संतुलित हिस्सेदारी पाने की उनकी स्वतंत्रता को निर्देशित करता है। विकास के सामाजिक-आर्थिक संकेतकों पर ध्यान केंद्रित करने से समुदाय में महिलाओं का आत्म-सम्मान और आत्म-सम्मान बढ़ता है। समाज में स्वयं सहायता समूहों की भागीदारी ने निर्णय लेने की प्रक्रिया, जागरूकता कार्यक्रमों और उनके लिए उपलब्ध अधिकारों की मांग में महिलाओं की स्थिति में सुधार किया है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण
सामान्य आंकड़ों के अनुसार, भारत में महिलाओं द्वारा किए जाने वाले काम का हिस्सा पुरुषों द्वारा किए जाने वाले काम से ज़्यादा है। लेकिन, महिलाओं को दी जाने वाली मान्यता और वेतन पुरुषों की तुलना में कम है। भारत में, महिलाओं द्वारा किए जाने वाले अवैतनिक काम का प्रतिशत लगभग 41% है, जो पुरुषों के मामले में सिर्फ़ 33% है। महिलाओं द्वारा नियमित रूप से बचत करने से भी उनकी ज़रूरतें पूरी नहीं होती हैं, इसलिए यहीं पर SHG समाज में विकास और उन्नति के सामाजिक-आर्थिक संकेतकों को बेहतर बनाने में मदद करते हैं।

वित्तीय निर्णय लेने की प्रक्रिया में सहायता
एसएचजी ने महिलाओं को नियमित रूप से बचत करने और उस बचत को किसी उत्पादक कार्य में उपयोग करने में सहायता करने में भी योगदान दिया है। इसके अलावा, एसएचजी औपचारिक वित्तीय संस्थानों तक भी पहुँच प्रदान करते हैं जहाँ महिलाएँ अपनी ज़रूरतों और इच्छाओं के अनुसार अपनी बचत का प्रबंधन कर सकती हैं।

महिलाओं के लिए ऋण तक पहुंच
स्वयं सहायता समूहों में भागीदारी से व्यक्ति की आर्थिक गतिशीलता बढ़ती है, जिससे जीवन स्तर में सुधार होता है। उल्लेखनीय है कि कई परिवारों ने इन स्वयं सहायता समूहों में शामिल होने या खुद को नामांकित करने के बाद अपनी बुनियादी जरूरतों की पूर्ति और सामाजिक-आर्थिक कारकों में सुधार का अनुभव किया है।

महिलाओं के लिए रोजगार
स्वयं सहायता समूह महिलाओं के लिए रोजगार पैदा कर सकते हैं। इससे उन्हें व्यावसायिक उद्यमों में शामिल होने या अपना खुद का व्यवसाय शुरू करने में मदद मिली है। सरकार ने समाज के कुछ वर्गों के लिए अपनी रणनीति और नीतियां बनाने में SHG की कई मानक विशेषताओं को अपने हाथ में ले लिया है। खैर, इसे भारत में विकास के सामाजिक-आर्थिक संकेतकों में सुधार करने में SHG के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक बड़ी उपलब्धि माना जा सकता है।

वास्तव में, स्वयं सहायता समूहों ने महिलाओं को शक्ति प्राप्त करने और किसी भी तरह की निर्भरता के बिना अपने स्वयं के जीवन को बनाने में मदद की है। माइक्रोफाइनेंस ने महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली असमानता और ऋण की कमी की समस्याओं को कम करने में काफी हद तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन समूहों द्वारा महिलाओं [4,5,6]पर किया गया प्रभाव अल्पकालिक नहीं है, यह एक दीर्घकालिक प्रभाव है जो महिलाओं को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और अपनी प्रतिभा का उपयोग करने में मदद करेगा। SHG के वित्तीय अनुशासन और निर्णय लेने के पहलू ग्रामीण परिवारों को व्यापक आशाजनक परिणाम प्रदान करेंगे। हालाँकि, कुछ लोगों का यह भी मानना है कि महिलाओं के लिए ऋण तक पहुँच केवल उनके लिए कार्यभार और पुनर्भुगतान का दबाव बनाती है, और उनके उत्थान में बहुत कम मदद करती है। इन समूहों की पहुँच समाज में मौजूद सामाजिक-आर्थिक कारकों पर भी निर्भर करती है । SHG महिलाओं का पूरी तरह से उत्थान नहीं कर सकते, समाज के अन्य लोगों और उनके परिवार के सदस्यों को भी व्यक्तिगत रूप से काम करना होगा।

II. विचार-विमर्श

महिला सशक्तिकरण का एक महत्वपूर्ण पहलू आर्थिक स्वावलंबन है। आर्थिक रूप से स्वावलंबी महिलाएं अपने जीवन की बेहतरी के लिए निर्णय लेने और अपने अधिकारों की रक्षा करने में सक्षम होती हैं। महिला स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन को बढ़ावा देने के लिए एक प्रभावी साधन हैं।

महिला स्वयं सहायता समूह छोटे समूह हैं जो समान आर्थिक और सामाजिक पृष्ठभूमि वाली महिलाओं से बने होते हैं। ये समूह बचत और ऋण के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने का प्रयास करते हैं। महिला स्वयं सहायता समूह महिलाओं को निम्नलिखित तरीकों से आर्थिक रूप से सशक्त बनाते हैं:

- बचत: महिला स्वयं सहायता समूह महिलाओं को बचाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। बचत से महिलाओं को अपने परिवार के लिए आवश्यक वस्तुओं और सुविधाओं को खरीदने में मदद मिलती है।
- ऋण: महिला स्वयं सहायता समूह महिलाओं को ऋण प्रदान करते हैं। ऋण से महिलाओं को अपने व्यवसाय को शुरू करने या बढ़ाने में मदद मिल सकती है।
- प्रशिक्षण: महिला स्वयं सहायता समूह महिलाओं को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। प्रशिक्षण से महिलाओं को नए कौशल सीखने और अपने व्यवसाय को बढ़ाने में मदद मिल सकती है।
- महिला: महिला स्वयं सहायता समूह महिलाओं को सशक्त बनाने में मदद करते हैं। समूह की जिम्मेदारियां महिलाओं को एक-दूसरे से सीखती हैं और अपने अधिकारों के बारे में जागरूक होती हैं।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

- महिला स्वयं सहायता समूहों ने भारत में महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन राज्यों ने लाखों महिलाओं को बचाने, ऋण लेने, व्यवसाय शुरू करने और उनके जीवन को बेहतर बनाने में मदद की है।
- महिला स्वयं सहायता समूह की सफलता के कुछ कारण निम्नलिखित हैं:
- महिलाओं का समूह: महिलाओं का समूह एक-दूसरे का समर्थन और प्रोत्साहन प्रदान करता है।
- सामान्य उद्देश्य: महिला स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के पास एक समान उद्देश्य होता है, जो उन्हें एक साथ मिलकर काम करने के लिए प्रेरित करता है।
- प्रशिक्षण और सहायता: महिला स्वयं सहायता समूहों को सरकार और गैर-सरकारी संगठनों से प्रशिक्षण और सहायता मिलती है।

महिला स्वयं सहायता समूहों को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

- महिला स्वयं सहायता समूहों को व्यवसाय और वित्तीय मामलों में अधिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।
- महिला स्वयं सहायता समूहों को अधिक बाजार पहुंच प्रदान की जानी चाहिए।

महिला स्वयं सहायता समूह महिलाओं के वित्तीय स्वावलंबन के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण हैं। इन समूहों को मजबूत बनाने और उनकी सहायता के लिए अधिक प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।

महिला सशक्तिकरण आज एक लोकप्रिय शब्द बन गया है और सरकार के सामाजिक-आर्थिक विकास कार्यक्रमों में इसे महत्वपूर्ण स्थान मिला है। और क्यों न हो? दुनिया की आधी आबादी महिलाओं की है और वे दुनिया के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। हालांकि, उनमें से अधिकांश सबसे गरीब, उत्पीड़ित, वंचित और भेदभाव की शिकार हैं। विश्व बैंक ने अपनी रिपोर्ट (2006) में सटीक रूप से टिप्पणी की है कि महिलाओं को अक्सर संपत्ति और विरासत के अधिकारों से वंचित किया जाता है। असमानता का जाल महिलाओं की पीढ़ियों को शिक्षित होने से रोक सकता है; श्रम बाजार में उनकी भागीदारी को सीमित कर सकता है। प्रो. अमर्त्य सेन (1995) ने बताया कि लैंगिक असमानता के प्रति लैंगिक सहिष्णुता वैधता और शुद्धता की धारणाओं से निकटता से जुड़ी हुई है। पारिवारिक व्यवहार में, पुरुषों और महिलाओं के बीच असमानताओं को स्वाभाविक या उचित माना जाता है। कभी-कभी असमानताओं से संबंधित निर्णय महिलाओं द्वारा स्वयं लिए जाते हैं और उन्हें क्रियान्वित किया जाता है। नई विश्व व्यवस्था में कोई भी देश विकास प्रक्रिया में महिलाओं को शामिल किए बिना आगे नहीं बढ़ सकता है। स्वाभाविक रूप से, महिलाओं, विशेष रूप से गरीब ग्रामीण महिलाओं को चुनौतियों को स्वीकार करने और विकास प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए सक्षम बनाना अनिवार्य हो जाता है। महिला सशक्तीकरण एक सतत प्रक्रिया है जो उन्हें उन ताकतों से लड़ने में सक्षम बनाती है जो उन्हें प्रताड़ित करती हैं, उन्हें संसाधनों और अवसरों तक समान पहुंच प्रदान करती है और संसाधनों पर नियंत्रण प्रदान करती है। महिला सशक्तीकरण (कबीर, 1999) उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके द्वारा उन महिलाओं को ऐसी क्षमता प्राप्त करने के लिए रणनीतिक जीवन विकल्प बनाने की क्षमता से वंचित किया गया है। विश्व बैंक की रिपोर्ट (2001) महिला सशक्तीकरण को व्यक्तिगत महिला या महिलाओं के समूह की विकल्प बनाने और विकल्पों को[7,8,9] वांछित कार्यों और परिणामों में बदलने की क्षमता बढ़ाने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित करती है। इस प्रक्रिया के केंद्र में वे कार्य हैं जो व्यक्तिगत और सामूहिक परिसंपत्तियों का निर्माण करते हैं और संगठनात्मक और संस्थागत की दक्षता और निष्पक्षता में सुधार करते हैं जो इन निधियों के उपयोग को नियंत्रित करते हैं। महिला सशक्तीकरण, संक्षेप में, शक्तिहीनता से शक्तिशाली, वंचित से विशेषाधिकार प्राप्त और महिलाओं को संसाधनों यानी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक पर नियंत्रण रखने में सक्षम बनाने का परिवर्तन दर्शाता है। एक शोध अध्ययन ने महिला सशक्तिकरण के आठ मानदंड सुझाए हैं, जैसे व्यावसायिक गतिशीलता, आर्थिक सुरक्षा, क्रय शक्ति, घरेलू निर्णय लेने में भागीदारी, परिवार में स्वतंत्रता आदि। भारत सरकार ने पंचवर्षीय योजनाओं और महिला कल्याण योजनाओं के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की उन्नति के लिए ठोस प्रयास किए हैं। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए राष्ट्रीय नीति (2001) का उद्देश्य महिलाओं के विकास के लिए अनुकूल वातावरण बनाना, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में समानता और महिलाओं के खिलाफ सभी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करना है। ग्रामीण विकास कार्यक्रमों, आर्थिक हस्तक्षेपों और आत्मविश्वास निर्माण और जागरूकता पैदा करने वाले अभियानों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को सक्रिय किया जा सकता है।महिला सशक्तिकरण शब्द का तात्पर्य सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों की एक श्रृंखला से है, जो गरीब महिलाओं की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने, उनमें आत्मविश्वास पैदा करने और उनके सर्वांगीण विकास के लिए पूर्ण सहायता प्रदान करने पर केंद्रित है। हाल के वर्षों में, महिला स्वयं सहायता समूह महिलाओं के बीच उद्यमिता विकास के एक प्रभावी साधन के रूप में उभरे हैं। उद्यमिता में महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण की प्रबल संभावना है। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी के शब्दों में "समूह बचत और समूह कार्रवाई साहूकारों के अभिशाप को दूर कर सकती है। चूंकि पूरी प्रणाली पारदर्शी रूप से व्यवस्थित है, इसलिए बचत और बचत गरीबों के लिए और गरीबों के अनौपचारिक बैंक बन सकते हैं"।

III. परिणाम

भारत में कोविड-19 महामारी ने सभी को लगभग समान तीव्रता से दुख में डुबो दिया है। हालांकि, अनिश्चितता और बाधाओं का प्रकोप महिलाओं जैसे पहले से ही कमजोर लोगों के लिए और भी अधिक अभूतपूर्व रहा है। इस परिदृश्य में, महिलाओं के समग्र विकास और सशक्तिकरण के लिए स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

स्वयं सहायता समूह: संक्षिप्त पृष्ठभूमि

स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) एक गांव आधारित वित्तीय मध्यस्थ समिति है जिसमें आमतौर पर 10-20 स्थानीय महिलाएं शामिल होती हैं। सदस्य कुछ महीनों तक छोटे-छोटे नियमित बचत योगदान करते हैं जब तक कि समूह में ऋण देने के लिए पर्याप्त पूंजी न हो जाए। फिर सदस्यों या अन्य ग्रामीणों को धन वापस उधार दिया जा सकता है। इन एसएचजी को फिर माइक्रोक्रेडिट की डिलीवरी के लिए बैंकों से 'जोड़ा' जाता है। यह क्षमता निर्माण, गतिविधि समूहों की योजना, बुनियादी ढांचे के निर्माण, प्रौद्योगिकी, ऋण और विपणन पर जोर देता है।

भारत में स्वयं सहायता समूहों का विकास

- इस दिशा में पहली संगठित पहल 1954 में गुजरात में की गई थी, जब अहमदाबाद के टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन (टीएलए) ने मिल श्रमिकों के परिवारों की महिलाओं को संगठित करने के लिए अपनी महिला शाखा का गठन किया ताकि उन्हें सिलाई, बुनाई, कढ़ाई, टाइपसेटिंग और आशुलिपि आदि जैसे प्राथमिक कौशल में प्रशिक्षित किया जा सके।
- 1972 में , जब इला भट्ट के नेतृत्व में एक ट्रेड यूनियन के रूप में स्व-नियोजित महिला संघ (SEWA) का गठन किया गया, तो इसे और अधिक व्यवस्थित संरचना दी गई। उन्होंने फेरीवालों, विक्रेताओं, बुनकरों जैसे घर-आधारित संचालकों आदि जैसी महिला श्रमिकों को संगठित किया, जिसका प्राथमिक उद्देश्य उनकी आय और संपत्ति बढ़ाना; उनके भोजन और पोषण मानकों को बढ़ाना; और उनकी संगठनात्मक और नेतृत्व शक्ति को बढ़ाना था। बाजार और तकनीकी इनपुट तक उनकी पहुँच को व्यापक बनाने के लिए, इन प्राथमिक संघों को गुजरात राज्य महिला सेवा सहकारी संघ, बनासकांठा DWCRA, महिला सेवा संघ आदि जैसे संघ बनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया ।
- नाबार्ड ने 1986-87 में मैसूर पुनर्वास एवं विकास एजेंसी (MYRDA) के "स्वयं सहायता समूहों की बचत और ऋण प्रबंधन" पर एक कार्य अनुसंधान परियोजना का समर्थन और वित्त पोषण किया। MYRDA गुलबर्गा में स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा दे रहा है।
- नाबार्ड द्वारा 1992 में शुरू की गई एसएचजी बैंक लिंकेज परियोजना दुनिया की सबसे बड़ी माइक्रोफाइनेंस परियोजना बन गई है। नाबार्ड ने आरबीआई के साथ मिलकर 1993 से एसएचजी को बैंकों में बचत खाता खोलने की अनुमति दी। इस कदम ने एसएचजी आंदोलन को काफी बढ़ावा दिया और एसएचजी-बैंक लिंकेज कार्यक्रम का मार्ग प्रशस्त किया।
- स्थानीय स्तर पर छोटे समूह गठन के प्रमुख प्रयोग तमिलनाडु और केरल में लगभग दो दशक पहले तमिलनाडु महिला कृषि कार्यक्रम (टीएएनडब्ल्यूए) 1986 , केरल के सहभागी गरीबी न्यूनीकरण कार्यक्रम (कुडुम्बश्री) 1995 और तमिलनाडु महिला विकास परियोजना (टीएनडब्ल्यूडीपी) 1989 के माध्यम से शुरू किए गए थे। [10,11,12]
- 1999 में , भारत सरकार ने स्वयं सहायता समूहों के गठन और कौशल विकास के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना (एसजीएसवाई) शुरू की।
- दीन दयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम) को ग्रामीण विकास मंत्रालय के तहत वर्ष 2011 में पूरे देश में मिशन मोड में लागू किया गया, जिसका उद्देश्य ग्रामीण गरीब महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) में संगठित करना है।
- उदाहरण के लिए, एडेलगिव फाउंडेशन द्वारा उद्यमस्त्री अभियान जैसी पहलों ने अन्य राज्यों के अलावा महाराष्ट्र और राजस्थान में महिला उद्यमियों पर ध्यान केंद्रित किया है , जिसमें MAVIM जैसे स्वयं सहायता समूहों और अन्य प्रासंगिक हितधारकों का लाभ उठाया गया है।
- फेसबुक की प्रगति और गूगल की वूमेन विल सहित अन्य ने भी महिला उद्यमियों के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं।

स्वयं सहायता समूहों का महत्व

कोविड-पश्चात युग की गतिशीलता

- नवाचार, प्रौद्योगिकी और आत्मनिर्भरता को दिए जा रहे महत्व के कारण, विशेष रूप से कोविड के बाद के युग में, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को नौकरियों और आय का तीव्र नुकसान उठाना पड़ा है।
- इस संदर्भ में, स्वयं सहायता समूह महिलाओं को आय-सृजनकारी आर्थिक अवसर प्रदान करने में मदद कर सकते हैं।
- सामाजिक एकांत
- गहरी पितृसत्ता वाले समाज में, यदि महिलाएं रोजगार प्राप्त करना चाहती हैं, तो भी महिलाओं पर घरेलू जिम्मेदारी की प्रमुख परंपरा और सामाजिक कलंक के कारण उनकी आर्थिक उन्नति और अवसरों तक उनकी पहुंच पुरुष समकक्षों की तुलना में सीमित हो जाती है।
- स्वयं सहायता समूहों द्वारा इस सामाजिक बाधा को उनकी सर्व-समावेशी और महिला-केन्द्रित भागीदारी के कारण दूर किया जा रहा है।
- उल्लेखनीय अलगाव

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

- यद्यपि महिलाओं में घरेलू वित्त में योगदान करने की क्षमता होती है, लेकिन अक्सर उनके पास आय सृजन के साधनों से संबंधित निर्णयों में भाग लेने की क्षमता नहीं होती, जिसके कारण कई बार उनके परिवार गरीबी के कगार पर पहुंच जाते हैं।
- चूंकि स्वयं सहायता समूह महिलाओं को उद्यमी बनने के लिए एक माध्यम प्रदान करते हैं, इसलिए यह निर्णय लेने के अधिक अवसरों के लिए विश्वसनीय आधार तैयार करता है।
- महिलाओं की स्थिति
- यद्यपि भारत रोजगार के अवसरों, शहरीकरण और नवाचार के संदर्भ में तीव्र परिवर्तन के मुहाने पर है, तथापि अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी वैश्विक स्तर पर भारत की स्थिति के लिए महत्वपूर्ण बनी हुई है।
- यद्यपि कामकाजी महिलाओं की संख्या लगभग 432 मिलियन है, लेकिन लगभग 343 मिलियन महिलाएं वेतन वाली औपचारिक नौकरी या काम में नहीं हैं। अनुमान है कि उनमें से 324 मिलियन श्रम बल में नहीं हैं, और अन्य 19 मिलियन श्रम बल का हिस्सा हैं, लेकिन वे रोजगार में नहीं हैं।
- एसएचजी में महिलाओं के लिए रोजगार सृजन की महत्वपूर्ण क्षमता है, जैसा कि विभिन्न सफल उदाहरणों में देखा गया है। यह सही मायने में महिलाओं को पुरुष कार्यबल के बराबर रखता है।

महिला सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका

आर्थिक स्वतंत्रता

- स्वयं सहायता समूह महिला उद्यमियों को अपना व्यवसाय जारी रखने के लिए सूक्ष्म ऋण उपलब्ध कराते हैं, साथ ही उनके लिए बेहतर एजेंसी और निर्णय लेने के कौशल विकसित करने के लिए वातावरण भी तैयार करते हैं ।
- स्वयं सहायता समूह अपने सदस्यों में बचत करने और बैंकिंग सुविधाओं का उपयोग करने की आदत विकसित करते हैं ।
- इस प्रकार बचत की आदत महिलाओं की सौदेबाजी क्षमता को मजबूत बनाती है और वे उत्पादक उद्देश्यों के लिए ऋण प्राप्त करने की बेहतर स्थिति में होती हैं।
- महिलाएं अपने वित्त का प्रबंधन करने तथा लाभों को आपस में वितरित करने में सामूहिक बुद्धिमता से लाभ उठाती हैं।

समग्रता

- स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) महिलाओं का एक छोटा समूह होता है जो नियमित रूप से मौद्रिक योगदान देने के लिए एकजुट होते हैं।
- महत्वपूर्ण सूक्ष्म-वित्त प्रणालियों के रूप में उभरते हुए, स्वयं सहायता समूह ऐसे मंच के रूप में काम करते हैं जो महिलाओं के बीच एकजुटता को बढ़ावा देते हैं तथा उन्हें स्वास्थ्य, पोषण, लैंगिक समानता और लैंगिक न्याय के मुद्दों पर एक साथ लाते हैं।

सामाजिक उत्थान

- स्वयं सहायता समूह संस्कृति ने देश में परिवार के भीतर और अंततः बड़े पैमाने पर समाज में सत्ता की लैंगिक गतिशीलता में बदलाव ला दिया है।
- अब पारिवारिक मामलों में उनकी भूमिका अधिक है तथा उन्हें समुदाय को आगे बढ़ाने में हितधारक और भागीदार के रूप में देखा जाता है।
- वित्तीय स्वतंत्रता ने अंततः महिलाओं और उनकी आवाज़ के सामाजिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया है ।
- राजनीतिक गतिशीलता
- परिवर्तन और समावेशी विकास लाने के लिए स्वयं सहायता समूहों के कई सदस्यों को विधायक के रूप में चुना जा रहा है।
- शासन प्रक्रिया में उनकी भागीदारी उन्हें दहेज, शराबखोरी, खुले में शौच की समस्या, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल आदि जैसे मुद्दों को उजागर करने और नीतिगत निर्णयों को प्रभावित करने में सक्षम बनाती है।
- स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से सीखे गए नेतृत्व कौशल ने कई स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों को सरपंच/प्रधान के रूप में निर्वाचित होने में सहायता की।[13,14]
- संकट में महिलाओं को सशक्त बनाना
- विश्व बैंक की एक रिपोर्ट के अनुसार , स्वयं सहायता समूहों में महिलाएं बैंक संवाददाता के रूप में भी काम कर रही हैं, जिन्हें ' बैंक सखी' कहा जाता है ।
- यहां तक कि महामारी जैसे संकटपूर्ण समय के दौरान भी, वे पेंशन वितरण में मदद कर रहे हैं, दूरदराज के समुदायों को प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण से उनके खाते में जमा राशि तक पहुंचने के लिए घर-घर सेवा प्रदान कर रहे हैं।

स्वयं सहायता समूह: सफलता की कहानियाँ

कोविड-19 के खिलाफ सामुदायिक योद्धाओं के रूप में एसएचजी के पदचिह्न विभिन्न भारतीय राज्यों में महसूस किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, तमिलनाडु में, प्रत्येक पीडीएस दुकान पर दो एसएचजी स्वयंसेवकों को तैनात किया गया है ताकि यह सुनिश्चित

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

किया जा सके कि कतार में खड़े लोग पर्याप्त दूरी बनाए रखें। ओडिशा में , इन एसएचजी में संगठित ग्रामीण महिलाओं ने पुलिस कर्मियों और स्वास्थ्य कर्मियों के लिए 1 मिलियन से अधिक सूती मास्क बनाए।

- केरल में कुदुम्बश्री नामक एक स्वयं सहायता समूह अपने व्हाट्सएप ग्रुपों के नेटवर्क के माध्यम से फर्जी खबरों को दूर करने में मदद कर रहा है, जिसमें 100,000 से अधिक महिलाएं सदस्य हैं। इन प्लेटफॉर्म का उपयोग विशेष रूप से महामारी के बारे में तत्काल और प्रामाणिक जानकारी प्रसारित करने के लिए किया जाता है।
- यह केरल में 1,300 रसोई चलाने में भी शामिल है और बिस्तर पर पड़े या क्वारंटीन में रह रहे लोगों को भोजन उपलब्ध करा रहा है। महिला आर्थिक विकास महामंडल (MAVIM) और इसके तहत काम करने वाले कई महिला SHG ने ग्रामीण महाराष्ट्र में महामारी के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव का मुकाबला करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- इन महिलाओं ने MAVIM द्वारा संचालित दान अभियान के माध्यम से मुख्यमंत्री राहत कोष में लगभग 11 लाख रुपये का योगदान भी दिया।
- जीविका और प्रेरणा
- बिहार में एक संगठन, जीविका ने इस प्रकोप के बारे में जागरूकता और तैयारी सामग्री का प्रसार करने के लिए सूचना, शिक्षा और संचार (आईईसी) क्षेत्र में कदम रखा है।
- उत्तर प्रदेश में एक स्वयं सहायता समूह प्रेरणा ने स्ट्रीट आर्ट और दीवार पेंटिंग के माध्यम से सामाजिक दूरी पर संदेश देने का प्रयास किया है। झारखंड में कुछ स्वयं सहायता समूहों ने दीदी नाम से एक 24×7 हेल्पलाइन शुरू की है, जो प्रवासी मजदूरों को झारखंड में उनके गृहनगरों में निकासी और वापसी प्रक्रियाओं के बारे में सत्यापित जानकारी प्रदान करती है।[15,16]
- महाराष्ट्र में महिला आर्थिक विकास महामंडल (MAVIM)
- महाराष्ट्र में एसएचजी बढ़ती मात्रा और वित्तीय लेन-देन से निपटने में असमर्थ थे और उन्हें पेशेवर मदद की ज़रूरत थी। एसएचजी को वित्तीय और आजीविका सेवाएँ प्रदान करने के लिए MAVIM के तहत सामुदायिक प्रबंधित संसाधन केंद्र (CMRC) शुरू किया गया था। CMRC आत्मनिर्भर है और ज़रूरत के हिसाब से सेवाएँ प्रदान करता है।
- महिला आर्थिक विकास महिला मंडल जैसे स्वयं सहायता समूह, महाराष्ट्र के ग्रामीण विकास विभाग के राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत यूएमईडी अभियान, तथा तेजस्वनी जैसी सरकारी योजनाएं महिला सशक्तिकरण के लिए महिला उद्यमिता के विकास में लाभकारी साबित हुई हैं।
- ओडिशा में मिशन शक्ति
- "मिशन शक्ति" महिला स्वयं सहायता समूहों (WSHG) को बढ़ावा देने के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए स्वयं सहायता मिशन है, जो विभिन्न सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों को शुरू करने के लिए है, जिसे 8 मार्च 2001 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की पूर्व संध्या पर ओडिशा में लॉन्च किया गया था। मिशन शक्ति का स्पष्ट उद्देश्य महिलाओं को ऋण और बाजार संपर्क प्रदान करके लाभकारी गतिविधियों के माध्यम से सशक्त बनाना है। मिशन शक्ति के तहत WSHG के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण ओडिशा सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम है। इसमें परिकल्पना की गई है कि समय के साथ अधिक से अधिक महिलाएँ WSHG का हिस्सा बनेंगी। राज्य के सभी ब्लॉकों और शहरी स्थानीय निकायों में अब तक लगभग 70 लाख महिलाओं को 6 लाख समूहों में संगठित किया गया है।

स्वयं सहायता समूहों के लिए प्रमुख सरकारी नीतिगत उपाय

- वित्तपोषण प्रदान करना: नाबार्ड के अलावा, सार्वजनिक क्षेत्र में चार अन्य प्रमुख संगठन भी हैं जो स्वयं सहायता समूहों को आगे ऋण देने के लिए वित्तीय मध्यस्थों को ऋण प्रदान करते हैं। वे हैं:
- (ए) भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी),
- (ख) राष्ट्रीय महिला कोष (आरएमके), और
- (ग) आवास एवं शहरी विकास निगम (हुडको)।
- फिर, सार्वजनिक क्षेत्र/अन्य वाणिज्यिक बैंक हैं जो अपनी नीति और RBI के दिशा-निर्देशों के अनुसार कोई भी ऋण लेने के लिए स्वतंत्र हैं। स्व-रोजगार कार्यक्रम (SEP) के तहत, बैंक ऋण प्राप्त करने वाले सभी SHG को 7 प्रतिशत ब्याज दर से अधिक ब्याज सहायता उपलब्ध है। सभी महिला SHG को अतिरिक्त 3 प्रतिशत ब्याज सहायता भी उपलब्ध है जो समय पर अपना ऋण चुकाते हैं।
- 1999 में , भारत सरकार ने स्वयं सहायता समूहों के गठन और कौशल विकास के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना (एसजीएसवाई) शुरू की।
- दीन दयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम) को ग्रामीण विकास मंत्रालय के तहत वर्ष 2011 में पूरे देश में मिशन मोड में लागू किया गया था, जिसका उद्देश्य ग्रामीण गरीब महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) में संगठित करना और उन्हें आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए निरंतर सहायता प्रदान करना था, जब तक कि समय के साथ उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि न हो जाए, जिससे उनका जीवन स्तर बेहतर हो सके और वे घोर गरीबी से बाहर आ सकें। महिला एसएचजी को भारत सरकार के राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) द्वारा सहायता प्रदान की

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

जा रही है, जिसे विश्व बैंक द्वारा सह-वित्तपोषित किया जाता है । एनआरएलएम ने देश के 28 राज्यों और 6 केंद्र शासित प्रदेशों में एसएचजी मॉडल को आगे बढ़ाया है, जिससे 67 मिलियन से अधिक महिलाओं तक पहुंच बनाई गई है।

- कौशल एवं उद्यमिता को बढ़ावा देना: उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने मुद्रा योजना, उद्योगिनी योजना, अन्नपूर्णा योजना और स्टैंड-अप इंडिया जैसी अनेक योजनाएं शुरू की हैं।[17,18]
- प्रधानमंत्री ने हाल ही में 'आत्मनिर्भर नारीशक्ति से संवाद' में भाग लिया और दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम) के तहत पदोन्नत महिला स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) सदस्यों/सामुदायिक संसाधन व्यक्तियों के साथ बातचीत की। कार्यक्रम के दौरान, देश भर की महिला एसएचजी सदस्यों की सफलता की कहानियों का एक संग्रह, साथ ही कृषि आजीविका के सार्वभौमिकरण पर एक पुस्तिका जारी की गई। प्रधानमंत्री ने 4 लाख से अधिक एसएचजी को 1625 करोड़ रुपये की पूंजी सहायता राशि भी जारी की।
- मिशन शक्ति एसएचजी के सूक्ष्म उद्यमों के गठन के माध्यम से महिलाओं के बीच उद्यमशीलता को बढ़ावा देने के लिए , मिशन शक्ति विभाग, ओडिशा ने परिधान मेड-अप और होम फर्निशिंग सेक्टर स्किल काउंसिल (एएमएचएसएससी), नई दिल्ली के सहयोग से परिधान निर्माण पर 10,000 मिशन शक्ति एसएचजी सदस्यों के कौशल विकास के लिए एक पहल शुरू करने के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।

एसएचजीएस भरण-पोषण से संबंधित मुद्दे

उच्च एनपीए

- भारत में यह बहस का विषय है कि स्वयं सहायता समूह आंदोलन के आर्थिक लाभ उनके जीवन में गुणात्मक परिवर्तन लाने के लिए पर्याप्त हैं या नहीं।
- वर्तमान में स्वयं सहायता समूहों के सामने सबसे बड़ी चुनौती एकाधिक वित्तपोषण, लेखा-जोखा रखने में अपर्याप्तता और अन्य कारणों से एनपीए का उच्च प्रतिशत है।
- स्वयं सहायता समूहों का औसत एनपीए लगभग 7-8 प्रतिशत है, जिसे नाबार्ड अगले पांच वर्षों में 2 प्रतिशत तक लाने का लक्ष्य रखता है।

तकनीकी कौशल का अभाव

- स्वयं सहायता समूहों द्वारा की जाने वाली अनेक गतिविधियां अभी भी प्राथमिक क्षेत्र के उद्यमों से संबंधित आदिम कौशल पर आधारित हैं।
- ग्रामीण क्षेत्रों में योग्य संसाधन कार्मिकों की कमी है जो समूह सदस्यों के कौशल उन्नयन/नए कौशल अर्जन में सहायता कर सकें।
- इसके अलावा, किसी समूह के सदस्य जरूरी नहीं कि सबसे गरीब परिवारों से आते हों।
- संसाधनों के लिए आश्रित
- अस्तित्व में आने के कई वर्षों बाद भी, अधिकांशतः स्वयं सहायता समूह अपने प्रवर्तक गैर सरकारी संगठनों या सरकारी एजेंसियों पर बहुत अधिक निर्भर हैं।
- जिन क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों का संघीकरण किया गया है, वहां से भी गैर सरकारी संगठनों/सरकारी एजेंसियों के हटने से प्रायः उनका पतन हो जाता है।
- अधिकांश स्वयं सहायता समूह संघों का नेतृत्व और प्रबंधन अभी भी गैर सरकारी संगठनों के हाथों में है।
- छोटे समूहों/सदस्यों की क्षमता निर्माण संगठनात्मक प्रभावशीलता का एक महत्वपूर्ण घटक है।
- संसदीय समिति की रिपोर्ट (2016-17)
- महिला सशक्तिकरण समिति (राज्यसभा) ने पाया कि पिछले कुछ वर्षों में स्वयं सहायता समूहों की संख्या में लगभग 70 प्रतिशत की वृद्धि होने के बावजूद, पूर्वोत्तर राज्य अरुणाचल प्रदेश में एक भी स्वयं सहायता समूह नहीं है।
- समिति ने साक्षरता स्तर में अनियमितताएं, दक्षिण में पितृसत्तात्मक मानसिकता का कम होना आदि भी पाया।
- क्षेत्रीय असमानता
- उत्तरी राज्यों की तुलना में दक्षिणी राज्यों में स्वयं सहायता समूहों की संख्या अधिक है।
- 66,000 संघों में से 60,000 चार दक्षिणी राज्यों अर्थात अविभाजित आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल में स्थित हैं।
- स्वयं सहायता समूहों की सफलता दर लगभग 50% ही रही है तथा इसकी विफलता दक्षिण की अपेक्षा उत्तर में अधिक स्पष्ट है।

अमर्त्य सेन बताते हैं कि अलग-अलग तरह के जीवन जीने की आज़ादी व्यक्ति की क्षमताओं में झलकती है । इसलिए, सरकार की नीतियों को स्थायी ऋण और संस्थागत समर्थन के बारहमासी प्रवाह के माध्यम से इन सभी महिला एसएचजी की सामाजिक-आर्थिक क्षमताओं को बढ़ाने की दिशा में निर्देशित किया जाना चाहिए।

दूसरे एआरसी का मानना है कि एसएचजी आंदोलन के विकास में सरकार की भूमिका एक सुविधाकर्ता और प्रवर्तक की होनी चाहिए। इसका उद्देश्य इस आंदोलन के लिए एक सहायक वातावरण बनाना होना चाहिए ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

- चूंकि देश के पूर्वोत्तर राज्यों और मध्य-पूर्वी भागों (बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान) में बड़ी संख्या में ग्रामीण परिवारों के पास ऋण के औपचारिक स्रोतों तक पर्याप्त पहुंच नहीं है, इसलिए इन क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूह आंदोलन के विस्तार पर विशेष जोर दिया जाना चाहिए।[19]
- वाणिज्यिक बैंकों और नाबार्ड को राज्य सरकार के साथ मिलकर स्वयं सहायता समूहों के लिए निरंतर नवीनता लाने और नए वित्तीय उत्पाद डिजाइन करने की आवश्यकता है।

अप्रयुक्त क्षमता: अकेले महाराष्ट्र में, 527,000 एसएचजी ने भारत में महिलाओं द्वारा संचालित सभी लघु-स्तरीय औद्योगिक इकाइयों के 50% से अधिक के लिए जिम्मेदार होने में भूमिका निभाई है, जो दर्शाता है कि एसएचजी महिला उद्यमिता के समग्र विकास का नेतृत्व कर सकते हैं। इसे अन्य राज्यों में भी दोहराया जाना चाहिए।

संकट के दौरान एसएचजी की प्रतिक्रिया: विश्व बैंक के अनुसार , भारत के 90 प्रतिशत से अधिक जिलों में, शहरों की चकाचौंध से दूर, एसएचजी महिलाएँ फेसमास्क बना रही हैं, सामुदायिक रसोई चला रही हैं, आवश्यक खाद्य आपूर्ति पहुँचा रही हैं, लोगों को स्वास्थ्य और स्वच्छता के बारे में जागरूक कर रही हैं और गलत सूचनाओं का मुकाबला कर रही हैं। इससे पता चलता है कि एसएचजी की संस्था में निवेश से सबसे कठिन समय में भी अच्छा लाभ ही मिलेगा।

सीखने के लिए उदाहरण: उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए, वैश्विक स्तर पर निगमों और संस्थाओं ने महिलाओं को आर्थिक सशक्तीकरण हासिल करने में मदद करने के लिए SHG के नेतृत्व वाले कार्यक्रम तैयार किए हैं। उदाहरण के लिए, एडेलगिव फाउंडेशन द्वारा उद्यमस्त्री अभियान जैसी पहल ने महाराष्ट्र और राजस्थान सहित अन्य राज्यों में महिला उद्यमियों पर ध्यान केंद्रित किया है, जिसमें MAVIM जैसे SHG और अन्य संबंधित हितधारकों का लाभ उठाया गया है। फेसबुक की प्रगति और गूगल की वूमेन विल जैसी अन्य पहलों ने भी महिला उद्यमियों के लिए समान अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसे भारत के उद्योगपति और यूनिकॉर्न भी अपना सकते हैं।

विश्व बैंक द्वारा जोर दिए गए एसएचजी 2.0 में एसएचजी की संरचनात्मक और ऋण-संबंधी चुनौतियों को संबोधित किया गया है, जिसे एसएचजी को महिला सशक्तीकरण और जन-केंद्रित विकास के लिए एक सच्चा माध्यम बनाने के लिए लागू किया जाना चाहिए। इसलिए सरकार की नीतियों को इस विचार के अनुरूप होना चाहिए ताकि कुशल संसाधन जुटाए जा सकें और महिलाओं का उत्थान हो सके।
महिलाओं की प्रतिभा को पहचानना और उन्हें सही अवसर प्रदान करना महत्वपूर्ण है। स्वयं सहायता समूहों ने ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों, विशेषकर महिलाओं को बहुत लाभ पहुँचाया है। स्वयं सहायता समूह आंदोलन ग्रामीण भारत में महिला लचीलापन और उद्यमिता के सबसे शक्तिशाली इनक्यूबेटरों में से एक रहा है। यह गांवों में लिंग के सामाजिक निर्माण को बदलने का एक शक्तिशाली चैनल है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ अब आय के स्वतंत्र स्रोत बनाने में सक्षम हैं। SHG ने जो क्रांतिकारी गति पैदा की है, उसने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने की उनकी यात्रा में आत्मविश्वास की एक महत्वपूर्ण भावना दी है।

स्वयं सहायता समूह लोगों के छोटे समूह हैं, मुख्य रूप से महिलाएँ, जो ग्रामीण क्षेत्रों में रहती हैं और पैसे बचाने और एक-दूसरे को ऋण प्रदान करने के लिए एक साथ आती हैं। वे बचत और ऋण गतिविधियों पर एक साथ निर्णय लेते हैं, जिसमें उद्देश्य, राशि, ब्याज दर और पुनर्भुगतान अनुसूची शामिल है।

यदि कोई व्यक्ति ऋण चुकाने में विफल रहता है, तो अन्य सदस्य इसे गंभीरता से लेते हैं और वसूली में मदद करते हैं। समूह स्वास्थ्य, पोषण और घरेलू हिंसा जैसे विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर भी चर्चा करता है और कार्रवाई करता है।

IV. निष्कर्ष

ये भारत में प्रसिद्ध स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के उदाहरण हैं:

1. महिला आर्थिक विकास महामंडल (MAVIM) : MAVIM महाराष्ट्र में एक महिला विकास निगम है। यह स्वयं सहायता समूहों के गठन के माध्यम से महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में काम करता है, उन्हें प्रशिक्षण, ऋण सुविधाएं और विभिन्न आय-उत्पादक गतिविधियों के लिए सहायता प्रदान करता है।
2. SEWA (स्व-रोजगार महिला संघ) : SEWA एक ट्रेड यूनियन और महिला सहकारी संस्था है जिसका उद्देश्य अनौपचारिक क्षेत्र में स्व-रोजगार वाली महिला श्रमिकों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार करना है। यह महिलाओं को SHG में संगठित करता है, उन्हें प्रशिक्षण प्रदान करता है, और उन्हें वित्तीय सेवाओं तक पहुँचने में मदद करता है।
3. कुडुम्बश्री : कुडुम्बश्री केरल सरकार द्वारा शुरू किया गया गरीबी उन्मूलन और महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम है। यह पड़ोस के समूहों के गठन को प्रोत्साहित करता है, जो अंततः स्वयं सहायता समूह बनाने के लिए एक साथ आते हैं। कुडुम्बश्री महिलाओं की विभिन्न आय-उत्पादक गतिविधियों और क्षमता निर्माण पर ध्यान केंद्रित करता है।

4. बंधन-कोननगर : बंधन-कोननगर एक गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) है जो स्वयं सहायता समूहों के गठन के माध्यम से गरीबी उन्मूलन की दिशा में काम करता है। यह हाशिए पर रहने वाले समुदायों की महिलाओं को माइक्रोफाइनेंस सेवाएं, प्रशिक्षण और आजीविका सहायता प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करता है।
5. भगिनी निवेदिता ग्रामीण विज्ञान निकेतन (बीएनजीवीएन): बीएनजीवीएन एक ग्रामीण विकास संगठन है जो महिला सशक्तिकरण और स्थायी आजीविका को बढ़ावा देता है। यह स्वयं सहायता समूहों के गठन की सुविधा प्रदान करता है और महिलाओं को आय-उत्पादक गतिविधियों के लिए प्रशिक्षण, वित्तीय सेवाएं और तकनीकी सहायता प्रदान करता है।

स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) की समस्याएं

यद्यपि स्वयं सहायता समूहों ने गरीबी उन्मूलन और सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण प्रगति की है, फिर भी अभी भी ऐसी चुनौतियां हैं जिनका समाधान किया जाना आवश्यक है:

- लाभार्थियों की पहचान: सबसे गरीब लोगों की पहचान करना और उन्हें शामिल करना एक चुनौती बनी हुई है।
- सीमित प्रशिक्षण, क्षमता निर्माण और कौशल उन्नयन : उपयुक्त प्रशिक्षण योजनाओं, गुणवत्ता प्रशिक्षण और विशेषज्ञ प्रशिक्षण संस्थानों का अभाव है।
- वित्तीय समावेशन का अभाव : औपचारिक संस्थाओं द्वारा स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों में वित्तीय साक्षरता और उचित कवरेज का अभाव है।
- बाजार संपर्कों का अभाव : खराब बाजार संपर्क और अग्रिम एकीकरण स्वयं सहायता समूहों के विकास में बाधा डालते हैं।
- समुदाय में समर्थन संरचना : अनुकूल व्यावसायिक वातावरण और मूल्य श्रृंखला संवर्धन का अभाव एसएचजी के विकास को सीमित करता है।
- प्रभावी स्वयं सहायता समूहों के लिए आगे का रास्ता
- जरूरतमंद लोगों की सहभागितापूर्ण पहचान के लिए सामुदायिक संसाधन व्यक्तियों को विकसित करने की आवश्यकता है।
- स्वयं सहायता समूह के सदस्यों के कौशल एवं क्षमता को बढ़ाने के प्रयास किये जाने चाहिए ।
- स्वयं सहायता समूहों के सभी स्तरों पर एक समान वित्तीय प्रबंधन प्रणाली सुनिश्चित करना बैंक खातों में वृद्धि, वित्तीय साक्षरता और समुदाय के सदस्यों की समावेशन क्षमता के लिए महत्वपूर्ण है।
- बहुविध एवं विविध आजीविका : संघीय स्तर पर लघु आकार के उद्यमों की समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए प्रगतिशील नेतृत्व की आवश्यकता है।
- टिकाऊ आजीविका के लिए बाजार संबंधों को मजबूत करना और आगे एकीकरण आवश्यक है।
- अनुकूल कारोबारी माहौल बनाने और राज्यों में उचित क्लस्टरिंग के साथ मूल्य श्रृंखलाओं की पहचान करने की आवश्यकता है।
- समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए एसएचजी पारिस्थितिकी तंत्र के भीतर सक्षम मानव संसाधनों की नियुक्ति करना।
- योजनाबद्ध अभिसरण : गरीबों की सेवा करने वाली संस्थाओं के साथ क्षेत्र-स्तरीय अभिसरण तालमेल को अधिकतम करने और लोक कल्याणकारी योजनाओं के प्रभाव को अनुकूलतम बनाने के लिए आवश्यक है।

भारत में गरीबी उन्मूलन और महिला सशक्तिकरण के लिए स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) एक प्रभावी तंत्र साबित हुए हैं। अपनी सामूहिक ताकत के माध्यम से, एसएचजी ने वित्त तक पहुंच प्रदान की है, आजीविका के अवसर निर्मित किए हैं और सामाजिक समावेश को बढ़ावा दिया है। हालांकि, एसएचजी के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान उनकी निरंतर सफलता के लिए महत्वपूर्ण है।

सार्वभौमिक लामबंदी, क्षमता निर्माण, वित्तीय समावेशन, विविध आजीविका, सामुदायिक सहायता संरचनाओं और योजनाबद्ध अभिसरण पर ध्यान केंद्रित करके, स्वयं सहायता समूहों के प्रभाव को और बढ़ाया जा सकता है, जिससे समाज के आर्थिक रूप से वंचित वर्गों के लिए सतत और समावेशी विकास हो सकेगा।[20]

संदर्भ

1. कबीर, नैला (2005). "क्या माइक्रोफाइनेंस महिला सशक्तिकरण के लिए एक 'जादुई गोली' है? दक्षिण एशिया से निष्कर्षों का विश्लेषण"। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक . 40 (44/45): 4709–4718. ISSN 0012-9976 . JSTOR 4417357 .
2. ^ "मनी एंड क्रेडिट"(पीडीएफ)। आर्थिक विकास को समझना: कक्षा दस के लिए सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक। नई दिल्ली:एनसीईआरटी। 2019. पृष्ठ 50-51।आईएसबीएन 978-81-7450-655-9ओसीएलसी 1144708028 .
3. ↑ (भारतीय रिज़र्व बैंक) संग्रहीत 2008-05-12 पर वेबैक मशीन
4. ^ गुगर्टी, मैरी के; बिस्के, पियरे; एंडरसन, सी. लेह (2019)। "विकास प्रदान करना? दक्षिण एशिया और अफ्रीका में विकास मध्यस्थों के रूप में स्वयं सहायता समूहों पर साक्ष्य" । विकास नीति समीक्षा । 37 (1): 129–151. doi : 10.1111/dpr.12381 . ISSN 1467-7679 . पीएमसी 7269175 . पीएमआईडी 32494112 .
5. ↑ स्टुअर्ट रदरफोर्ड. 'स्वयं सहायता समूह माइक्रोफाइनेंस प्रदाता के रूप में: वे कितने अच्छे हो सकते हैं?' माइमियो, 1999, पृ. 9

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

6. ^ अग्रवाल, शालिनी; शम्सी, मोहम्मद सलमान (1 जून 2022)। "स्वयं सहायता समूह आंदोलन: ग्रामीण महिला सशक्तिकरण का अथक मार्गदर्शक और समर्थक जो सतत विकास की ओर अग्रसर है"। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ टेक्नोलॉजी मैनेजमेंट एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट । 21 (2): 229. doi : 10.1386/tmsd_00058_1 ।
7. ↑ रॉबर्ट पेक क्रिस्टन, एन. श्रीनिवासन और रॉजर वूरहिस, "बाजार में गिरावट का प्रबंधन: विनियमित वित्तीय संस्थान और माइक्रोसेविंग में कदम।" मैडलिन हिर्शलैंड (संपादक) गरीबों के लिए बचत सेवाएँ: एक परिचालन मार्गदर्शिका , कुमारियन प्रेस, ब्लूमफील्ड, सी.टी., 2005, पृ. 106.
8. ↑ भारत में ईडीए और एपीएमएएस स्वयं सहायता समूह: रोशनी और छाया का एक अध्ययन , केयर, सीआरएस, यूएसएआईडी और जीटीजेड, 2006, पृष्ठ 11
9. ↑ फॉइलेट सी. और ऑग्सबर्ग बी. 2007. "भारत में स्वयं सहायता समूह बैंकिंग लिंकेज कार्यक्रम का प्रसार", ग्रामीण वित्त अनुसंधान पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन: परिणाम में बदलाव, एफएओ और आईएफएडी द्वारा आयोजित, रोम, 19-21 मार्च।
10. पतंजलि द्वारा अष्टध्यायी के लिए टिप्पणियां 3.3.21 और 4.1.14
11. ↑ आर.सी. मजूमदार और ए.डी. पुसल्कर (संपादक): भारतीय लोगों का इतिहास और संस्कृति. वॉल्यूम I, वैदिक युग. मुंबई: भारतीय विद्या भवन 1951, पी.394
12. ↑ "Vedic Women: Loving, Learned, Lucky!". मूल से 20 नवंबर 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 दिसंबर 2006.
13. ↑ "InfoChange women: Background & Perspective". मूल से 24 जुलाई 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 दिसंबर 2006.
14. ↑ Jyotsana Kamat (2006-1). "Status of Women in Medieval Karnataka". मूल से 1 जनवरी 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 दिसंबर 2006. |date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
15. ↑ Vimla Dang (19 जून 1998). "Feudal mindset still dogs women's struggle". The Tribune. मूल से 19 दिसंबर 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 दिसंबर 2006.
16. ↑ "The Commission of Sati (Prevention) Act, 1987". मूल से 21 नवंबर 2006 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 दिसंबर 2006.
17. ↑ K. L. Kamat (19 दिसंबर 2006). "The Yellamma Cult". मूल से 7 जुलाई 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 25 दिसंबर 2006.
18. ↑ दुबोईस, जीन अंटोनी और बौचंप, हेनरी किंग, हिन्दू मैनर्स, कस्टम्स और सेरेमनिज़, कलेरेंडन प्रेस, 1897
19. ↑ इयान ब्रायंट वेल्स, हिन्दू मुस्लिम यूनिटी का राजदूत
20. ↑ Jyotsna Kamat (19 दिसंबर 2006). "Gandhi and Status of Women". मूल से 9 दिसंबर 2010 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 दिसंबर 2006.